संज्ञा-विकार : कारक
(Case)

कारक

मज़दूर ने बारात को आते देखा।
अमीर के नौकरों ने उसे डंडे से मारा।
मज़दूर माँ के लिए पैसे कमा कर लाया था।
रईस पालकी से उतरा।
आवाज़ें सुनकर रईस का दिमाग खराब हो गया।
वह गलीचे पर पालथी मारकर बैठ गया।
वह बोला, "हे प्रभो! दुनिया को इनकी क्या जरूरत है।"

इन वाक्यों में :

किसने देखा?	–	मज़दूर ने
किसे देखा?	–	बारात को
किससे मारा?	–	डंडे से
किसके लिए पैसे कमाए?	–	माँ के लिए
किससे उतरा?	–	पालकी से
किसका दिमाग खराब हुआ?	–	रईस का
कहाँ बैठा?	–	गलीचे पर

इन सभी वाक्यों में संज्ञा या सर्वनाम पदों का क्रिया संबंध दिखाया गया है तथा अंतिम वाक्य में प्रभु को संबोधित करके कुछ कहा गया है।

ऊपर दिए गए वाक्यों में पदों के साथ 'ने', 'को', 'से', 'के लिए', 'से', 'का', 'पर', 'हे', आदि चिह्न भी लगे हैं जिनके कारण इन शब्दों का क्रिया तथा दूसरे शब्दों से संबंध स्पष्ट होता है। इन्हीं चिह्नों के कारण इनके स्वरूप में भिन्नता है।

संज्ञा और सर्वनाम के जिस रूप से उसका संबंध वाक्य में अन्य शब्दों के साथ जाना जाता है, उसे 'कारक' कहते हैं।

विभक्तियाँ (परसर्ग)–संज्ञा और सर्वनाम का संबंध क्रिया या दूसरे शब्दों से बतलाने के लिए उनके साथ जो चिह्न लगाए जाते हैं, उन्हें **परसर्ग** या **विभक्ति** कहते हैं। जैसे–ने, को, से, के लिए, में, पर, का, की, के, हे, अरे, आदि।

हिंदी के कारक

हिंदी में आठ कारक हैं :

मोहन ने कविता सुनाई।

सुधांशु क्रिकेट खेलेगा।

1. कर्ता कारक

वाक्य में जिस संज्ञा या सर्वनाम पद के द्वारा क्रिया व्यापार के करने वाले का बोध होता है, वह 'कर्ता कारक' कहलाता है। जैसे–'मोहन ने कविता सुनाई।'–इस वाक्य में कविता सुनाने का काम मोहन कर रहा है, अतः मोहन कर्ता कारक है। कर्ता कारक की विभक्ति या परसर्ग 'ने' है।

'मोहन कविता पढ़ रहा है।'–इस वाक्य में भी 'पढ़ने' का काम मोहन ही कर रहा है, अतः मोहन कर्ता कारक है, परंतु यहाँ कर्ता कारक की विभक्ति 'ने' का प्रयोग नहीं हुआ। अतः स्पष्ट है कि कर्ता कारक का प्रयोग 'ने' विभक्ति के साथ भी हो सकता है तथा इसके बिना भी।

'ने' का प्रयोग वर्तमानकाल और भविष्यत काल की क्रिया होने पर नहीं होता। भूतकाल में भी क्रिया के सकर्मक होने पर ही 'ने' का प्रयोग होता है। जैसे :

1. गीता रोटी बनाती है। (वर्तमानकाल)
2. सुधांशु क्रिकेट खेलेगा। (भविष्यत काल)
3. हरीश देर तक सोया। (भूतकाल अकर्मक क्रिया)
4. योगेश ने पाठ याद किया (भूतकाल सकर्मक क्रिया)

1. कर्ता कारक 'को' विभक्ति के साथ भी आता है। जैसे :

(क) राम को बाज़ार जाना है।

(ख) कविता को कुछ पुस्तकें चाहिएँ।

(ग) विद्यार्थियों को देश के सम्मान की रक्षा करनी है।

2. असमर्थता का भाव प्रकट करने के लिए कर्ता कारक का बोध कराने के लिए 'से' परसर्ग का भी प्रयोग किया जाता है। जैसे :

(क) मोहन से पढ़ा नहीं जाता। ('मोहन' –कर्ता है)

(ख) दुर्बल भिखारी से चला नहीं जाता। ('भिखारी' –कर्ता है)

3. कर्मवाच्य तथा भाववाच्य में कर्ता के साथ से, दुवारा, के दुवारा का प्रयोग होता है। जैसे :

(क) बच्चे के दुवारा खिलौना तोड़ा गया। ('बच्चे'–कर्ता है)

(ख) विद्यार्थियों दुवारा काम किया गया। ('विद्यार्थियों'–कर्ता है)

2. कर्म कारक

वाक्य में जिस संज्ञा या सर्वनाम पद पर क्रिया के व्यापार का फल पड़ता है, वह 'कर्म कारक' में होता है। जैसे :

माली ने पौधों को पानी दिया।

सुनीता ने चित्र बनाया।

प्रथम वाक्य में 'दिया' क्रिया के व्यापार का फल 'पौधों' पर पड़ रहा है; इसलिए 'पौधा' कर्म कारक में है। कर्म कारक का विभक्ति-चिह्न 'को' है।

'सुनीता ने चित्र बनाया।' इस वाक्य में 'बनाया' क्रिया के व्यापार का फल 'चित्र' पर पड़ रहा है, अतः 'चित्र' कर्म कारक में है, परंतु यहाँ कर्म कारक की विभक्ति 'को' का प्रयोग नहीं हुआ। अतः स्पष्ट है कि 'को' विभक्ति के बिना भी कर्म कारक का प्रयोग हो सकता है।

कभी-कभी एक वाक्य में दो कर्म भी प्रयुक्त होते हैं। जैसे–ऊपर लिखे प्रथम वाक्य में पौधे तथा पानी दो कर्म हैं। इसी प्रकार 'राम ने पिता जी को पत्र लिखा।'

इस वाक्य में 'पिता जी' और 'पत्र' दोनों कर्म कारक में हैं। वाक्य में दो कर्म होने पर 'प्राणी-वाचक कर्म' के साथ ही 'को' का प्रयोग होता है। जैसे ऊपर के वाक्य में 'पिता जी' प्राणीवाचक कर्म है, अतः उसके साथ 'को' का प्रयोग किया गया है, 'पत्र' के साथ नहीं। यहाँ 'पत्र' मुख्य कर्म है और 'पिता जी' गौण। यदि वाक्य में विभक्तिरहित कर्म हो, तो उसे पहचानने के लिए 'क्या' और 'कहाँ' प्रश्न करना चाहिए। जैसे :

(क) मामा जी दिल्ली गए। (कहाँ गए? दिल्ली–कर्म)

(ख) लड़का खाना खा रहा है। (क्या खा रहा है? खाना–कर्म)

3. करण कारक

क्रिया को करने में कर्ता जिस साधन की सहायता लेता है, वह 'करण कारक' में होता है। जैसे :

बढ़ई ने लकड़ी से मेज़ बनाई।

मज़दूर ने फावड़े से मिट्टी खोदी।

इन वाक्यों में मेज़ बनाने का साधन 'लकड़ी' और खोदने का साधन 'फावड़ा' है। अतः 'लकड़ी से' और 'फावड़े से' करण कारक में हैं। करण कारक का विभक्ति-चिह्न 'से' है।

कभी-कभी 'से' के स्थान पर 'के द्वारा' का प्रयोग भी होता है, जैसे :

समारोह का उद्घाटन मंत्री महोदय के द्वारा हुआ।

'से' विभक्ति का प्रयोग केवल साधन के रूप में ही नहीं किया जाता, अपितु कई अन्य प्रकार से भी होता है। जैसे :

(क) वह कैंसर से मरा है। (कारण)

(ख) पत्र के द्वारा सूचना मिलते ही वह आ गया।

4. संप्रदान कारक

जिसके लिए कोई कार्य किया जाए या जिसे कुछ दिया जाए वह पद 'संप्रदान कारक' में होता है। जैसे :

पीयूष ने छोटे भाई के लिए खिलौने खरीदे।

बच्चे को खाना दो।

इन वाक्यों में 'छोटे भाई के लिए' तथा 'बच्चे को' संप्रदान कारक में हैं। संप्रदान कारक की विभक्तियाँ–को, के लिए, के वास्ते, के निमित्त, हेतु , आदि हैं।

संज्ञा-विकार : कारक
(Case)

कारक

मज़दूर ने बारात को आते देखा।
अमीर के नौकरों ने उसे डंडे से मारा।
मज़दूर माँ के लिए पैसे कमा कर लाया था।
रईस पालकी से उतरा।
आवाज़ें सुनकर रईस का दिमाग खराब हो गया।
वह गलीचे पर पालथी मारकर बैठ गया।
वह बोला, "हे प्रभो! दुनिया को इनकी क्या ज़रूरत है।"

इन वाक्यों में :

किसने देखा?	–	मज़दूर ने
किसे देखा?	–	बारात को
किससे मारा?	–	डंडे से
किसके लिए पैसे कमाए?	–	माँ के लिए
किससे उतरा?	–	पालकी से
किसका दिमाग खराब हुआ?	–	रईस का
कहाँ बैठा?	–	गलीचे पर

इन सभी वाक्यों में संज्ञा या सर्वनाम पदों का क्रिया संबंध दिखाया गया है तथा अंतिम वाक्य में प्रभु को संबोधित करके कुछ कहा गया है।

ऊपर दिए गए वाक्यों में पदों के साथ 'ने', 'को', 'से', 'के लिए', 'से', 'का', 'पर', 'हे', आदि चिह्न भी लगे हैं जिनके कारण इन शब्दों का क्रिया तथा दूसरे शब्दों से संबंध स्पष्ट होता है। इन्हीं चिह्नों के कारण इनके स्वरूप में भिन्नता है।

संज्ञा और सर्वनाम के जिस रूप से उसका संबंध वाक्य में अन्य शब्दों के साथ जाना जाता है, उसे 'कारक' कहते हैं।

विभक्तियाँ (परसर्ग)–संज्ञा और सर्वनाम का संबंध क्रिया या दूसरे शब्दों से बतलाने के लिए उनके साथ जो चिह्न लगाए जाते हैं, उन्हें **परसर्ग** या **विभक्ति** कहते हैं। जैसे–ने, को, से, के लिए, में, पर, का, की, के, हे, अरे, आदि।

हिंदी के कारक

हिंदी में आठ कारक हैं :

मोहन ने कविता सुनाई।

सुधांशु क्रिकेट खेलेगा।

1. कर्ता कारक

वाक्य में जिस संज्ञा या सर्वनाम पद के द्वारा क्रिया व्यापार के करने वाले का बोध होता है, वह 'कर्ता कारक' कहलाता है। जैसे–'मोहन ने कविता सुनाई।'–इस वाक्य में कविता सुनाने का काम मोहन कर रहा है, अतः मोहन कर्ता कारक है। कर्ता कारक की विभक्ति या परसर्ग 'ने' है।

'मोहन कविता पढ़ रहा है।'–इस वाक्य में भी 'पढ़ने' का काम मोहन ही कर रहा है, अतः मोहन कर्ता कारक है, परंतु यहाँ कर्ता कारक की विभक्ति 'ने' का प्रयोग नहीं हुआ। अतः स्पष्ट है कि कर्ता कारक का प्रयोग 'ने' विभक्ति के साथ भी हो सकता है तथा इसके बिना भी।

'ने' का प्रयोग वर्तमानकाल और भविष्यत काल की क्रिया होने पर नहीं होता। भूतकाल में भी क्रिया के सकर्मक होने पर ही 'ने' का प्रयोग होता है। जैसे :

1. गीता रोटी बनाती है।	(वर्तमानकाल)
2. सुधांशु क्रिकेट खेलेगा।	(भविष्यत काल)
3. हरीश देर तक सोया।	(भूतकाल अकर्मक क्रिया)
4. योगेश ने पाठ याद किया	(भूतकाल सकर्मक क्रिया)

1. कर्ता कारक 'को' विभक्ति के साथ भी आता है। जैसे :

(क) राम को बाज़ार जाना है।

(ख) कविता को कुछ पुस्तकें चाहिएँ।

(ग) विद्यार्थियों को देश के सम्मान की रक्षा करनी है।

2. असमर्थता का भाव प्रकट करने के लिए कर्ता कारक का बोध कराने के लिए 'से' परसर्ग का भी प्रयोग किया जाता है। जैसे :

(क) मोहन से पढ़ा नहीं जाता। ('मोहन' –कर्ता है)

(ख) दुर्बल भिखारी से चला नहीं जाता। ('भिखारी' –कर्ता है)

3. कर्मवाच्य तथा भाववाच्य में कर्ता के साथ से, द्वारा, के द्वारा का प्रयोग होता है। जैसे :

(क) बच्चे के द्वारा खिलौना तोड़ा गया। ('बच्चे'–कर्ता है)

(ख) विद्यार्थियों द्वारा काम किया गया। ('विद्यार्थियों'–कर्ता है)

2. कर्म कारक

वाक्य में जिस संज्ञा या सर्वनाम पद पर क्रिया के व्यापार का फल पड़ता है, वह 'कर्म कारक' में होता है। जैसे :

माली ने पौधों को पानी दिया।

सुनीता ने चित्र बनाया।

प्रथम वाक्य में 'दिया' क्रिया के व्यापार का फल 'पौधों' पर पड़ रहा है; इसलिए 'पौधा' कर्म कारक में है। कर्म कारक का विभक्ति-चिह्न 'को' है।

'सुनीता ने चित्र बनाया।' इस वाक्य में 'बनाया' क्रिया के व्यापार का फल 'चित्र' पर पड़ रहा है, अतः 'चित्र' कर्म कारक में है, परंतु यहाँ कर्म कारक की विभक्ति 'को' का प्रयोग नहीं हुआ। अतः स्पष्ट है कि 'को' विभक्ति के बिना भी कर्म कारक का प्रयोग हो सकता है।

कभी-कभी एक वाक्य में दो कर्म भी प्रयुक्त होते हैं। जैसे–ऊपर लिखे प्रथम वाक्य में पौधे तथा पानी दो कर्म हैं। इसी प्रकार 'राम ने पिता जी को पत्र लिखा।'

इस वाक्य में 'पिता जी' और 'पत्र' दोनों कर्म कारक में हैं। वाक्य में दो कर्म होने पर 'प्राणी-वाचक कर्म' के साथ ही 'को' का प्रयोग होता है। जैसे ऊपर के वाक्य में 'पिता जी' प्राणीवाचक कर्म है, अतः उसके साथ 'को' का प्रयोग किया गया है, 'पत्र' के साथ नहीं। यहाँ 'पत्र' मुख्य कर्म है और 'पिता जी' गौण। यदि वाक्य में विभक्तिरहित कर्म हो, तो उसे पहचानने के लिए 'क्या' और 'कहाँ' प्रश्न करना चाहिए। जैसे :

(क) मामा जी दिल्ली गए। (कहाँ गए? दिल्ली–कर्म)

(ख) लड़का खाना खा रहा है। (क्या खा रहा है? खाना–कर्म)

3. करण कारक

क्रिया को करने में कर्ता जिस साधन की सहायता लेता है, वह 'करण कारक' में होता है। जैसे :

बढ़ई ने लकड़ी से मेज़ बनाई।

मज़दूर ने फावड़े से मिट्टी खोदी।

इन वाक्यों में मेज़ बनाने का साधन 'लकड़ी' और खोदने का साधन 'फावड़ा' है। अतः 'लकड़ी से' और 'फावड़े से' करण कारक में हैं। करण कारक का विभक्ति-चिह्न 'से' है।

कभी-कभी 'से' के स्थान पर 'के द्वारा' का प्रयोग भी होता है, जैसे :

समारोह का उद्घाटन मंत्री महोदय के द्वारा हुआ।

'से' विभक्ति का प्रयोग केवल साधन के रूप में ही नहीं किया जाता, अपितु कई अन्य प्रकार से भी होता है। जैसे :

(क) वह कैंसर से मरा है। (कारण)

(ख) पत्र के द्वारा सूचना मिलते ही वह आ गया।

4. संप्रदान कारक

जिसके लिए कोई कार्य किया जाए या जिसे कुछ दिया जाए वह पद 'संप्रदान कारक' में होता है। जैसे :

पीयूष ने छोटे भाई के लिए खिलौने खरीदे।

बच्चे को खाना दो।

इन वाक्यों में 'छोटे भाई के लिए' तथा 'बच्चे को' संप्रदान कारक में हैं। संप्रदान कारक की विभक्तियाँ–को, के लिए, के वास्ते, के निमित्त, हेतु , आदि हैं।

कर्म और संप्रदान कारक में अंतर–कर्म कारक और संप्रदान कारक–दोनों में 'को' विभक्ति का प्रयोग होता है। कर्म कारक में जिस शब्द के साथ 'को' जुड़ा होता है, उस पर क्रिया का फल पड़ता है। जैसे :

सुरेंद्र ने महेंद्र को पढ़ाया। (पढ़ाया क्रिया का कर्म)

संप्रदान कारक के चिह्न 'को' का अर्थ 'के लिए' या "के वास्ते' होता है। संप्रदान कारक में किसी को कुछ देने या किसी के लिए कुछ काम करने का बोध होता है। जैसे :

(क) **गरीबों को** भोजन और वस्त्र दे दो। (गरीबों के लिए/के वास्ते)

(ख) यहाँ **पढ़ने को** पुस्तकें नहीं मिलतीं। (पढ़ने के लिए/के वास्ते)

संप्रदान कारक में 'देने' या 'उपकार करने' का भाव मुख्य होता है।

5. अपादान कारक

जिस पद से अलग होने का भाव प्रकट हो, वह पद 'अपादान कारक' में होता है। जैसे :

वृक्ष से फल गिरा।

रामसिंह गाँव से चला गया।

इन वाक्यों में 'वृक्ष से' और 'गाँव से' अपादान कारक में हैं। अपादान कारक की विभक्ति 'से' है।

जिन शब्दों से घृणा, द्वेष, भय, तुलना, निकलना, आदि का बोध होता है, वे भी अपादान कारक में होते हैं। जैसे :

(क) मैं गंदगी से घृणा करता हूँ। (घृणा)

(ख) अपने साथियों से ईर्ष्या-द्वेष अच्छी बात नहीं। (ईर्ष्या-द्वेष)

(ग) गीदड़ शेर से भय खाता है। (भय)

(घ) रवि पंकज से अच्छा है। (तुलना)

(ङ) गंगा हिमालय से निकलती है। (निकलना)

करण और अपादान में अंतर–'करण' तथा 'अपादान'–दोनों कारकों का विभक्ति-चिह्न 'से' है किंतु अर्थ की दृष्टि से दोनों में भेद है। करण कारक में 'से' सहायक साधन का सूचक है जबकि अपादान कारक में 'से' अलगाव, अलग या दूर होने का। जैसे :

करण कारक	अपादान कारक
(क) राम गाड़ी से आया है।	(क) राम स्टेशन से आया है।
(ख) तुम पेंसिल से लिखते हो।	(ख) वृक्ष से पत्ते गिरते हैं।

6. संबंध कारक

संज्ञा या सर्वनाम का वह शब्द जिससे दूसरे के साथ संबंध ज्ञात हों, 'संबंध कारक' कहलाता है। जैसे :

यह हरिशंकर का पुत्र है।

विद्‌यालय के प्रधानाचार्य परिश्रमी तथा योग्य हैं।

इन वाक्यों में 'हरिशंकर का', तथा 'विद्‌यालय के' शब्द संबंध कारक में हैं क्योंकि इनका संबंध क्रमशः 'पुत्र', तथा 'प्रधानाचार्य' से है।

संबंध कारक की विभक्ति का, के, की ; ना, ने, नी ; रा, रे, री हैं।

7. अधिकरण कारक

जिस पद से क्रिया के आधार का बोध होता है, वह पद 'अधिकरण कारक' में होता है। जैसे :

कमल सरोवर में खिला है।

माता जी घर के भीतर हैं।

इन वाक्यों में 'सरोवर में', और 'घर के भीतर' पद उन स्थानों को सूचित करते हैं जहाँ क्रिया का व्यापार होता है; अतः ये अधिकरण कारक में हैं। अधिकरण कारक की विभक्तियाँ–में, पर, भीतर, आदि हैं। अपादान कारक के संबंध में ध्यान रखिए कि :

1. अधिकरण कारक में अंदर, ऊपर, आदि परसर्गों का प्रयोग होता है। जैसे :
   - (क) कमरे के अंदर क्यों छिपे बैठे हो?
   - (ख) छत के ऊपर मत जाओ।

   यहाँ यह बात विशेष रूप से ध्यान में रखनी चाहिए कि इन परसर्गों से पूर्व 'के' का प्रयोग आवश्यक है।

2. अपादान कारक द्वारा सीखने का भाव भी प्रकट होता है। जैसे : छात्र अध्यापक से पढ़ते हैं।

8. संबोधन कारक

शब्द के जिस रूप से किसी को पुकारा जाए, वह 'संबोधन कारक' में होता है। जैसे :

(क) अरे बेटा! तुम कहाँ खो गए थे?

(ख) हे विद्‌यार्थियो! देश का भविष्य तुम्हीं पर निर्भर है।

इन वाक्यों में 'अरे बेटा', 'हे विद्‌यार्थियो' संबोधन के रूप में हैं। संबोधन कारक में अन्य कारकों की अपेक्षा विशेष बात यह है कि इसमें संज्ञा शब्दों के पूर्व कभी-कभी अव्यय शब्दों (जैसे–अरे, हे, अजी, ओ, आदि) का प्रयोग होता है। कभी-कभी बिना अव्यय शब्दों के भी संबोधन कारक होता है। जैसे :

(क) बच्चो! ध्यान से सुनो।

(ख) भाइयो और बहनो! मातृभूमि तुम्हें पुकार रही है।

संबोधन कारक में संज्ञा शब्दों के बाद संबोधन चिह्न (!) भी लगाया जाता है।

कारकों के संबंध में विशेष नियम

1. बोलना, भूलना और लाना तथा जानना सकर्मक क्रियाओं के भूतकालिक रूप में भी कर्ता के साथ 'ने' का प्रयोग नहीं होता। जैसे :
   (क) वह बोला कि मैं तुम्हारी सहायता करूँगा।
   (ख) राम मिठाई लाया।
   (ग) मोहन मेरी बात नहीं भूला।
2. कर्म कारक में जब 'कहना' शब्द का प्रयोग होता है, तो 'से' चिह्न का प्रयोग किया जाता है। जैसे : अध्यापक छात्रों से कहता है कि शोर मत करो।
3. अधिकरण कारक में निश्चित समय-सूचक शब्दों के साथ 'को' का प्रयोग किया जाता है। जैसे :
   (क) मेरे पिता जी आज रात को आ रहे हैं।
   (ख) सुरेश पहली तारीख को घर जा रहा है।
4. सामान्य रूप से समय की सूचना देते समय 'से' का प्रयोग होता है। जैसे–राम का भाई विदेश से एक वर्ष में लौटेगा।

5. नहाना, छींकना, खाँसना, आदि कुछ अकर्मक क्रियाओं के भूतकालिक रूप में कर्ता के साथ 'ने' का प्रयोग किया जाता है। जैसे :

(क) उसने छींक दिया, अतः मैं नहीं जाऊँगा।

(ख) उसने खाँसा तो मैं जाग गया।

6. किसी से प्यार करना, प्रार्थना करना, बात करना, माँगना या पूछना जैसे क्रियाओं में कर्म के साथ 'से' का प्रयोग होता है तथा अपादान कारक होता है। जैसे :

(क) तुम गीता से प्यार करते हो।

(ख) मैंने तुमसे प्रार्थना की थी कि मेरी सहायता करो।

(ग) उसने मोहन से पुस्तक माँगी।

7. कई बार परसर्गरहित अधिकरण कारक का भी प्रयोग होता है। जैसे :

(क) इस जगह पूर्ण शांति है। ('जगह' अधिकरण कारक है)

(ख) दर-दर भटकने से कुछ नहीं मिलेगा। ('दर-दर' अधिकरण कारक है)।

अभ्यास

1. कारक की परिभाषा लिखिए।
2. कारकों को उनकी विभक्ति-चिह्नों से जोड़िए।

कर्ता	से (पृथक)
कर्म	के लिए
करण	ने
संप्रदान	को
अपादान	से
संबंध	में, पर
अधिकरण	का, के

3. सही कारक तक रेखा खींचिए।

वह पेड़ से गिरा।	करण	उसने कलम से लिखा।
कमरा फूलों से सजाइए।	अपादान	मधुर स्कूल से चला गया।
रेल स्टेशन से चली।		रंगों से रंगोली बनाइए।

संज्ञा-विकार : कारक
(Case)

कारक

मज़दूर ने बारात को आते देखा।
अमीर के नौकरों ने उसे डंडे से मारा।
मज़दूर माँ के लिए पैसे कमा कर लाया था।
रईस पालकी से उतरा।
आवाज़ें सुनकर रईस का दिमाग खराब हो गया।
वह गलीचे पर पालथी मारकर बैठ गया।
वह बोला, "हे प्रभो! दुनिया को इनकी क्या ज़रूरत है।"

इन वाक्यों में :

किसने देखा?	–	मज़दूर ने
किसे देखा?	–	बारात को
किससे मारा?	–	डंडे से
किसके लिए पैसे कमाए?	–	माँ के लिए
किससे उतरा?	–	पालकी से
किसका दिमाग खराब हुआ?	–	रईस का
कहाँ बैठा?	–	गलीचे पर

इन सभी वाक्यों में संज्ञा या सर्वनाम पदों का क्रिया संबंध दिखाया गया है तथा अंतिम वाक्य में प्रभु को संबोधित करके कुछ कहा गया है।

ऊपर दिए गए वाक्यों में पदों के साथ 'ने', 'को', 'से', 'के लिए', 'से', 'का', 'पर', 'हे', आदि चिह्न भी लगे हैं जिनके कारण इन शब्दों का क्रिया तथा दूसरे शब्दों से संबंध स्पष्ट होता है। इन्हीं चिह्नों के कारण इनके स्वरूप में भिन्नता है।

संज्ञा और सर्वनाम के जिस रूप से उसका संबंध वाक्य में अन्य शब्दों के साथ जाना जाता है, उसे 'कारक' कहते हैं।

विभक्तियाँ (परसर्ग)–संज्ञा और सर्वनाम का संबंध क्रिया या दूसरे शब्दों से बतलाने के लिए उनके साथ जो चिह्न लगाए जाते हैं, उन्हें **परसर्ग** या **विभक्ति** कहते हैं। जैसे–ने, को, से, के लिए, में, पर, का, की, के, हे, अरे, आदि।

हिंदी के कारक

हिंदी में आठ कारक हैं :

मोहन ने कविता सुनाई।

सुधांशु क्रिकेट खेलेगा।

1. कर्ता कारक

वाक्य में जिस संज्ञा या सर्वनाम पद के द्वारा क्रिया व्यापार के करने वाले का बोध होता है, वह 'कर्ता कारक' कहलाता है। जैसे–'मोहन ने कविता सुनाई।'–इस वाक्य में कविता सुनाने का काम मोहन कर रहा है, अतः मोहन कर्ता कारक है। कर्ता कारक की विभक्ति या परसर्ग 'ने' है।

'मोहन कविता पढ़ रहा है।'–इस वाक्य में भी 'पढ़ने' का काम मोहन ही कर रहा है, अतः मोहन कर्ता कारक है, परंतु यहाँ कर्ता कारक की विभक्ति 'ने' का प्रयोग नहीं हुआ। अतः स्पष्ट है कि कर्ता कारक का प्रयोग 'ने' विभक्ति के साथ भी हो सकता है तथा इसके बिना भी।

'ने' का प्रयोग वर्तमानकाल और भविष्यत काल की क्रिया होने पर नहीं होता। भूतकाल में भी क्रिया के सकर्मक होने पर ही 'ने' का प्रयोग होता है। जैसे :

1. गीता रोटी बनाती है। (वर्तमानकाल)
2. सुधांशु क्रिकेट खेलेगा। (भविष्यत काल)
3. हरीश देर तक सोया। (भूतकाल अकर्मक क्रिया)
4. योगेश ने पाठ याद किया (भूतकाल सकर्मक क्रिया)

1. कर्ता कारक 'को' विभक्ति के साथ भी आता है। जैसे :

(क) राम को बाज़ार जाना है।

(ख) कविता को कुछ पुस्तकें चाहिएँ।

(ग) विद्यार्थियों को देश के सम्मान की रक्षा करनी है।

2. असमर्थता का भाव प्रकट करने के लिए कर्ता कारक का बोध कराने के लिए 'से' परसर्ग का भी प्रयोग किया जाता है। जैसे :

(क) मोहन से पढ़ा नहीं जाता। ('मोहन' –कर्ता है)

(ख) दुर्बल भिखारी से चला नहीं जाता। ('भिखारी' –कर्ता है)

3. कर्मवाच्य तथा भाववाच्य में कर्ता के साथ से, द्वारा, के द्वारा का प्रयोग होता है। जैसे :

(क) बच्चे के द्वारा खिलौना तोड़ा गया। ('बच्चे'–कर्ता है)

(ख) विद्यार्थियों द्वारा काम किया गया। ('विद्यार्थियों'–कर्ता है)

2. कर्म कारक

वाक्य में जिस संज्ञा या सर्वनाम पद पर क्रिया के व्यापार का फल पड़ता है, वह 'कर्म कारक' में होता है। जैसे :

माली ने पौधों को पानी दिया।

सुनीता ने चित्र बनाया।

प्रथम वाक्य में 'दिया' क्रिया के व्यापार का फल 'पौधों' पर पड़ रहा है; इसलिए 'पौधा' कर्म कारक में है। कर्म कारक का विभक्ति-चिह्न 'को' है।

'सुनीता ने चित्र बनाया।' इस वाक्य में 'बनाया' क्रिया के व्यापार का फल 'चित्र' पर पड़ रहा है, अतः 'चित्र' कर्म कारक में है, परंतु यहाँ कर्म कारक की विभक्ति 'को' का प्रयोग नहीं हुआ। अतः स्पष्ट है कि 'को' विभक्ति के बिना भी कर्म कारक का प्रयोग हो सकता है।

कभी-कभी एक वाक्य में दो कर्म भी प्रयुक्त होते हैं। जैसे–ऊपर लिखे प्रथम वाक्य में पौधे तथा पानी दो कर्म हैं। इसी प्रकार 'राम ने पिता जी को पत्र लिखा।'

इस वाक्य में 'पिता जी' और 'पत्र' दोनों कर्म कारक में हैं। वाक्य में दो कर्म होने पर 'प्राणी-वाचक कर्म' के साथ ही 'को' का प्रयोग होता है। जैसे ऊपर के वाक्य में 'पिता जी' प्राणीवाचक कर्म है, अतः उसके साथ 'को' का प्रयोग किया गया है, 'पत्र' के साथ नहीं। यहाँ 'पत्र' मुख्य कर्म है और 'पिता जी' गौण। यदि वाक्य में विभक्तिरहित कर्म हो, तो उसे पहचानने के लिए 'क्या' और 'कहाँ' प्रश्न करना चाहिए। जैसे :

(क) मामा जी दिल्ली गए। (कहाँ गए? दिल्ली–कर्म)

(ख) लड़का खाना खा रहा है। (क्या खा रहा है? खाना–कर्म)

3. करण कारक

क्रिया को करने में कर्ता जिस साधन की सहायता लेता है, वह 'करण कारक' में होता है। जैसे :

बढ़ई ने लकड़ी से मेज़ बनाई।

मज़दूर ने फावड़े से मिट्टी खोदी।

इन वाक्यों में मेज़ बनाने का साधन 'लकड़ी' और खोदने का साधन 'फावड़ा' है। अतः 'लकड़ी से' और 'फावड़े से' करण कारक में हैं। करण कारक का विभक्ति-चिह्न 'से' है।

कभी-कभी 'से' के स्थान पर 'के द्वारा' का प्रयोग भी होता है, जैसे :

समारोह का उद्घाटन मंत्री महोदय के द्वारा हुआ।

'से' विभक्ति का प्रयोग केवल साधन के रूप में ही नहीं किया जाता, अपितु कई अन्य प्रकार से भी होता है। जैसे :

(क) वह कैंसर से मरा है। (कारण)

(ख) पत्र के द्वारा सूचना मिलते ही वह आ गया।

4. संप्रदान कारक

जिसके लिए कोई कार्य किया जाए या जिसे कुछ दिया जाए वह पद 'संप्रदान कारक' में होता है। जैसे :

पीयूष ने छोटे भाई के लिए खिलौने खरीदे।

बच्चे को खाना दो।

इन वाक्यों में 'छोटे भाई के लिए' तथा 'बच्चे को' संप्रदान कारक में हैं। संप्रदान कारक की विभक्तियाँ—को, के लिए, के वास्ते, के निमित्त, हेतु , आदि हैं।

कर्म और संप्रदान कारक में अंतर–कर्म कारक और संप्रदान कारक–दोनों में 'को' विभक्ति का प्रयोग होता है। कर्म कारक में जिस शब्द के साथ 'को' जुड़ा होता है, उस पर क्रिया का फल पड़ता है। जैसे :

सुरेंद्र ने महेंद्र को पढ़ाया। (पढ़ाया क्रिया का कर्म)

संप्रदान कारक के चिह्न 'को' का अर्थ 'के लिए' या "के वास्ते' होता है। संप्रदान कारक में किसी को कुछ देने या किसी के लिए कुछ काम करने का बोध होता है। जैसे :

(क) **गरीबों को** भोजन और वस्त्र दे दो। (गरीबों के लिए/के वास्ते)

(ख) यहाँ **पढ़ने को** पुस्तकें नहीं मिलतीं। (पढ़ने के लिए/के वास्ते)

संप्रदान कारक में 'देने' या 'उपकार करने' का भाव मुख्य होता है।

5. अपादान कारक

जिस पद से अलग होने का भाव प्रकट हो, वह पद 'अपादान कारक' में होता है। जैसे :

वृक्ष से फल गिरा।

रामसिंह गाँव से चला गया।

इन वाक्यों में 'वृक्ष से' और 'गाँव से' अपादान कारक में हैं। अपादान कारक की विभक्ति 'से' है।
जिन शब्दों से घृणा, द्वेष, भय, तुलना, निकलना, आदि का बोध होता है, वे भी अपादान कारक में होते हैं। जैसे :

(क) मैं गंदगी से घृणा करता हूँ। (घृणा)
(ख) अपने साथियों से ईर्ष्या-द्वेष अच्छी बात नहीं। (ईर्ष्या-द्वेष)
(ग) गीदड़ शेर से भय खाता है। (भय)
(घ) रवि पंकज से अच्छा है। (तुलना)
(ङ) गंगा हिमालय से निकलती है। (निकलना)

करण और अपादान में अंतर–'करण' तथा 'अपादान'–दोनों कारकों का विभक्ति-चिह्न 'से' है किंतु अर्थ की दृष्टि से दोनों में भेद है। करण कारक में 'से' सहायक साधन का सूचक है जबकि अपादान कारक में 'से' अलगाव, अलग या दूर होने का। जैसे :

करण कारक	अपादान कारक
(क) राम गाड़ी से आया है।	(क) राम स्टेशन से आया है।
(ख) तुम पेंसिल से लिखते हो।	(ख) वृक्ष से पत्ते गिरते हैं।

6. संबंध कारक

संज्ञा या सर्वनाम का वह शब्द जिससे दूसरे के साथ संबंध ज्ञात हों, 'संबंध कारक' कहलाता है। जैसे :

यह हरिशंकर का पुत्र है।

विद्यालय के प्रधानाचार्य परिश्रमी तथा योग्य हैं।

इन वाक्यों में 'हरिशंकर का', तथा 'विद्यालय के' शब्द संबंध कारक में हैं क्योंकि इनका संबंध क्रमशः 'पुत्र', तथा 'प्रधानाचार्य' से है।

संबंध कारक की विभक्ति का, के, की ; ना, ने, नी ; रा, रे, री हैं।

7. अधिकरण कारक

जिस पद से क्रिया के आधार का बोध होता है, वह पद 'अधिकरण कारक' में होता है। जैसे :

कमल सरोवर में खिला है।

माता जी घर के भीतर हैं।

इन वाक्यों में 'सरोवर में', और 'घर के भीतर' पद उन स्थानों को सूचित करते हैं जहाँ क्रिया का व्यापार होता है; अतः ये अधिकरण कारक में हैं। अधिकरण कारक की विभक्तियाँ–में, पर, भीतर, आदि हैं। अपादान कारक के संबंध में ध्यान रखिए कि :

1. अधिकरण कारक में अंदर, ऊपर, आदि परसर्गों का प्रयोग होता है। जैसे :
   (क) कमरे के अंदर क्यों छिपे बैठे हो?
   (ख) छत के ऊपर मत जाओ।

यहाँ यह बात विशेष रूप से ध्यान में रखनी चाहिए कि इन परसर्गों से पूर्व 'के' का प्रयोग आवश्यक है।

2. अपादान कारक द्वारा सीखने का भाव भी प्रकट होता है। जैसे : छात्र अध्यापक से पढ़ते हैं।

8. संबोधन कारक

शब्द के जिस रूप से किसी को पुकारा जाए, वह 'संबोधन कारक' में होता है। जैसे :

(क) अरे बेटा! तुम कहाँ खो गए थे?

(ख) हे विद्यार्थियो! देश का भविष्य तुम्हीं पर निर्भर है।

इन वाक्यों में 'अरे बेटा', 'हे विद्यार्थियो' संबोधन के रूप में हैं। संबोधन कारक में अन्य कारकों की अपेक्षा विशेष बात यह है कि इसमें संज्ञा शब्दों के पूर्व कभी-कभी अव्यय शब्दों (जैसे–अरे, हे, अजी, ओ, आदि) का प्रयोग होता है। कभी-कभी बिना अव्यय शब्दों के भी संबोधन कारक होता है। जैसे :

(क) बच्चो! ध्यान से सुनो।

(ख) भाइयो और बहनो! मातृभूमि तुम्हें पुकार रही है।

संबोधन कारक में संज्ञा शब्दों के बाद संबोधन चिह्न (!) भी लगाया जाता है।

कारकों के संबंध में विशेष नियम

1. बोलना, भूलना और लाना तथा जानना सकर्मक क्रियाओं के भूतकालिक रूप में भी कर्ता के साथ 'ने' का प्रयोग नहीं होता। जैसे :
   (क) वह बोला कि मैं तुम्हारी सहायता करूँगा।
   (ख) राम मिठाई लाया।
   (ग) मोहन मेरी बात नहीं भूला।
2. कर्म कारक में जब 'कहना' शब्द का प्रयोग होता है, तो 'से' चिह्न का प्रयोग किया जाता है। जैसे : अध्यापक छात्रों से कहता है कि शोर मत करो।
3. अधिकरण कारक में निश्चित समय-सूचक शब्दों के साथ 'को' का प्रयोग किया जाता है। जैसे :
   (क) मेरे पिता जी आज रात को आ रहे हैं।
   (ख) सुरेश पहली तारीख को घर जा रहा है।
4. सामान्य रूप से समय की सूचना देते समय 'से' का प्रयोग होता है। जैसे–राम का भाई विदेश से एक वर्ष में लौटेगा।

5. नहाना, छींकना, खाँसना, आदि कुछ अकर्मक क्रियाओं के भूतकालिक रूप में कर्ता के साथ 'ने' का प्रयोग किया जाता है। जैसे :

(क) उसने छींक दिया, अतः मैं नहीं जाऊँगा।

(ख) उसने खाँसा तो मैं जाग गया।

6. किसी से प्यार करना, प्रार्थना करना, बात करना, माँगना या पूछना जैसे क्रियाओं में कर्म के साथ 'से' का प्रयोग होता है तथा अपादान कारक होता है। जैसे :

(क) तुम गीता से प्यार करते हो।

(ख) मैंने तुमसे प्रार्थना की थी कि मेरी सहायता करो।

(ग) उसने मोहन से पुस्तक माँगी।

7. कई बार परसर्गरहित अधिकरण कारक का भी प्रयोग होता है। जैसे :

(क) इस जगह पूर्ण शांति है। ('जगह' अधिकरण कारक है)

(ख) दर-दर भटकने से कुछ नहीं मिलेगा। ('दर-दर' अधिकरण कारक है)।

अभ्यास

1. कारक की परिभाषा लिखिए।
2. कारकों को उनकी विभक्ति-चिह्नों से जोड़िए।

कर्ता	से (पृथक)
कर्म	के लिए
करण	ने
संप्रदान	को
अपादान	से
संबंध	में, पर
अधिकरण	का, के

3. सही कारक तक रेखा खींचिए।

वह पेड़ से गिरा।	करण	उसने कलम से लिखा।
कमरा फूलों से सजाइए।	अपादान	मधुर स्कूल से चला गया।
रेल स्टेशन से चली।		रंगों से रंगोली बनाइए।

4. रिक्त स्थानों की पूर्ति उचित परसर्ग द्वारा कीजिए।

(क) बंदर पेड़ .... बैठा है।

(ख) भिखारी द्वार .... खड़ा है।

(ग) कृष्ण .... कंस मारा गया।

(घ) मैंने रस्सी .... साँप समझ लिया।

(ङ) दरी आँगन .... बिछा दो।

(च) रमेश .... मित्र .... छोटी बहन आई है।

(छ) छत .... गिरने .... लड़के को बहुत चोट आई।

5. रंगीन पदों में कारक बताइए।

(क) दूत ने अपने शाह का आग्रह प्रकट किया।

(ख) मन के होठों पर रस की बिसरी पहचान जगा।

(ग) मैंने डॉक्टर चूहानाथ कातर जी को बुलाया।

(घ) खिड़कियों से बाहर नज़र जाती।

(ङ) यमराज को कुछ आश्चर्य हुआ।

(च) यह डेमेट्रियल का चित्र है।